ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

eqfLye ,lksfl,'ku ,oa gyhe eqfLye dkWyst

MkW0 lqjs'oj jke feJk ,oa
,lksfl,V izksQslj] bfrgkl foHkkx
vfHk"ksd feJk

कानपुर नगर के प्रख्यात अल्पसंख्यक शिक्षण संस्था का दर्जा पा चुके हलीम मुस्लिम इण्टर कॉलेज, हलीम डिग्री कॉलेज व मुस्लिम जुबली गर्ल्स इण्टर कॉलेज वर्तमान में हलीम साहब के नाम से जानी जाती है, पर वास्तव में ये शिक्षण संस्थाएं उस मुस्लिम एसोसिएशन की देन है जिसे मुस्लिम जमात के तत्कालीन शिक्षा के प्रति अनूठा जज्बा रखने वाले लोगों ने स्थापित किया था। इनमें प्रमुख रूप से तत्कालीन मशहूर वकील फजलुर रहमान साहब का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उपलब्ध प्रमाणों व जानकारों से पता चलता है कि वकील फजलुर रहमान ने बच्चों को शिक्षा देने के उद्देश्य से सर्वप्रथम हीरामन पुरवा में जहाँ वह रहा करते थे, 1921 ई0 में एक मकान में प्राईमरी स्कूल की स्थापना की थी। जगह कम पड़ने पर यह विद्यालय 1913 ई0 में परेड स्थित नवाब इब्राहिम साहब के अहाते में स्थानान्तरित किया गया। इसी दौर में सर सैय्यद अहमद खान के इस आहवान पर कि मुस्लिम बच्चों को भी अंग्रेजी व अन्य विषयों की शिक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए। यह स्कूल भी सेकुलर रूप में आगे बढ़ने लगा था। वहीं पर यह मिडिल स्कूल में तब्दील हो गया। इसी बीच स्कूल की देखरेख व संचालन के लिए मुस्लिम–एसोसिएशन का गठन हुआ और स्कूल को आगे बढ़ाने में ठोस प्रयास शुरू हुए। 1916 में इस स्कूल का नाम 'मुस्लिम हाईस्कूल हो गया। छात्रों की बढ़ती संख्या को देखते हुए स्कूल के लिए नयी जगह की तलाश शुरू हुई। इसी बीच ऐसोसिएशन के लोग तत्कालीन चमड़े के बड़े कारोबारी व शहर के रईसों में शुमार खान बहादुर हाफिज मो0 हलीम से स्कूल की तरक्की के लिए मिले। फलतः हलीम साहब ने स्कूल तरक्की में सराहनीय योगदान दिया और फिर 1917 में मुस्लिम हाईस्कूल का नाम बदलकर 'हलीम मुस्लिम हाईस्कूल' कर दिया गया। स्कूल का नाम परिवर्तित होने से तुरन्त बाद हलीम साहब ने चमनगंज (आज वर्तमान कॉलेज है) में 17 एकड़ जमीन 17 हजार रूपये में खरीदी। जमीन खरीदने के बाद भवन में आ गया। और सन् 1940 ई0 में स्कूल को इण्टरमीडिएट की मान्यता मिली और सन् 1956 में स्कूल में विज्ञान की कक्षाएं भी शुरू हुई।

सन् 1948 ई0 में शिक्षा विभाग द्वारा माध्यमिक शिक्षा परिषद को नया रूप देने के बाद कॉलेज को कक्षा 3, 4, 5 की कक्षाएं बन्द करनी पड़ी। इसके बाद सन् 1950ई0 में एसोसिएशन ने हलीम मुस्लिम स्कूल नाम से (के0जी0 प्राईमरी तक) कॉलेज के ही प्रांगढ में एक अलग भवन में नये स्कूल की स्थापना की। इण्टर कॉलेज के आधे भवन में हलीम कोर्ट व आधे भवन को वशीर कोर्ट नाम से जाना जाता है। हलीम साहब के पुत्र वशीर साहब जो कि बार–एट–ला थे और जिनका खेलकूद क्षेत्र में अग्रणी नाम था के प्रयासों से ही ग्रीनपार्क स्टेडियम की स्थापना हुई थी और वसीर साहब अर्से तक यू0पी0 क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे थे ने अपने पिता हलीम साहब के बाद कॉलेज के भवन विस्तार में उल्लेखनीय योगदान दिया था। कॉलेज भवन निर्माण में तत्कालीन खान बहादुर शेख मो0 इब्रहिम साहब व शेख मो0 बख्श (अलीगढ़) के योगदान को विस्तृत नहीं किया जा सकता।

1976 ई0 में प्रदेश सरकार ने मुस्लिम एसोसिएशन के द्वारा संचालित हलीम मुस्लिम इण्टर कालेज को संविधान की धारा 30(1) के अन्तर्गत अल्पसंख्यक शिक्षण संस्था के रूप में घोषित कर दिया तब से इस संस्था को भी अल्पसंख्यक

शिक्षण संस्थाओं की भांति समस्त सुविधाएं व लाभ मिलने लगा है।

कॉलेज की प्रगति में जिन पूर्व प्राचार्यो व प्रवक्ताओं ने उल्लेखनीय योगदान दिया वे हैं–मो0 अब्दुल शकूर, सैय्यद इस्तफा अली, ए0वाई0 कुरैशी, एम0ए0 रिजवी (हलीम मुस्लिम डिग्री कॉलेज के संस्थापक), बी0 बहमद (पूर्व प्राचार्य), हासराम गुप्ता (उप प्रधानाचार्य), अब्दुल हफीज, काजी मो0 जुनैद (सभी प्रवक्ता)।

Mk0 ek0 bLyke Yyk [kk & इतिहास विभाग में इसी कॉलेज में अध्यक्ष रहे। तत्पश्चात अमेरिका के फनालडाल्फिया में इतिहास विभाग के प्रोफेसर नियुक्त हुए।

Lo0 ekykuk ek0 jQhd& अल्ल हजल विश्वविद्यालय मिस्त्र में इस्लामिक दर्शन शास्त्र के प्राध्यापक पद पर कार्यरत रहे।

lanHk xzUFk&

1. मॉण्टगोमरी,रॉबर्ट–स्टैटिस्टिकल एकाउण्टस आफ दि डिस्ट्रिक्ट ऑफ कानपोर, (कलकत्ता, 1848)
2. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर–1909–एच0आर0नेविल
3. के0बी0 पाण्डेय–डिस्ट्रिक्ट गजेटियर कानपुर, 1982 द्वितीयक स्रोतः
1. उत्तर प्रदेश में शिक्षा– डॉ0 माधवी मिश्रा
2. कानपुर का इतिहास भाग–प्रथम लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी व नारायण प्रसाद।
3. कानपुर का इतिहास भाग–द्वितीय लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी व नारायण प्रसाद।
4. कानपुर का इतिहास भाग–तृतीय, डॉ0 अरविन्द अरोड़ा।
5. मॉरल का शिक्षा विश्लेषण– शिव शरण त्रिपाठी।
6. कानपुर का इतिहास – श्री सर्वेश कुमार सुयश।
7. कानपुर का इतिहास– श्री रामदेव मोरोलिया तथा श्री बालकृष्ण महेश्वरी।
8. कानपुर नगर परिक्रमा, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, कानपुर।
9. मजूमदार, आर0सी0 ब्रिटिश पैरामउण्टसी एवं इण्डियन रेनेसा बम्बई 1965
10. बटलर, डी0 आउट लाइन्स आफ दी टोपोग्राफी एण्ड स्टैटिक्स आफ दि सदर्न डिस्ट्रिक आफ अवध।
11. भटनागर जी0डी0 अवध अण्डर वाजिद अली शाह।

मुस्लिम शिक्षा की उन्नति के लिए प्रत्येक मुस्लिम संस्थाओं को कई प्रकार के अलग–अलग योगदान दिये गये, जिससे संस्थाओं की उन्नति दिन पर दिन होती गयी, सर्वाधिक योगदान हलीम साहब ने दिया, जिन्होंने कई स्कूलों की स्थापनाएं की गयी, जिससे मुस्लिम छात्रों को उर्दू, फारसी, पढ़ने के लिए कोई परेशानी न उठानी पड़े।

हलीम मुस्लिम डिग्री कॉलेज की स्थापना स्वतंत्रता पश्चात सन् 1959 में इण्टर कॉलेज के विशाल प्रांगण में ही की गयी थी। (हिस्ट्री आफ कानपुर–प्रकाशक–कानपुर) इतिहास समिति, कानपुर, संस्मरण–2005 लेखक– डॉ0 अरविन्द अरोड़ा 'मुक्त' पृ0 189) बाद में इसके निजी भवन में निर्माण हुआ। पहले यह महाविद्यालय आगरा विश्वविद्यालय व वर्तमान में छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है। वर्तमान में यहाँ लगभग 1900 छात्र–छात्रायें शिक्षण ग्रहण कर रहे है। स्नातक स्तर पर छात्राओं की शिक्षा का अलग से विशेष प्रबन्ध है जिसके लिए भव्य भवन व अन्य सुविधाएं प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है इस महाविद्यालय के प्राचार्य स्व0 श्री एम0ए0 रिजवी 1959 से 1969 तक रहे। उनके अवकाश ग्रहण करने पर श्री चित्ररत्न कौशिक विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र ने लगभग 3 वर्षो तक प्राचार्य का कार्यभार संभाला था। 1971 में डॉ0 एम0आई0 खान अमेरिका से आकर महाविद्यालय के प्राचार्य नियुक्त हुए थे उनके त्यागपत्र देने पर डॉ0 एम0एम0 शमीम कार्यवाहक प्राचार्य रहे। 1976 ई0 में डॉ0ए0हसन नियमित प्राचार्य नियुक्त हुए। तीन वर्षो बाद ईराक चले गये इसके

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

उपरान्त डॉ0 एस0एम0 शमीम व डॉ0 एम0एस0 कालरा समय–समय पर प्राचार्य पद पर कार्यरत रहे, 1981 में स्व0 डा0ए0 हलीम सिद्दकी नियमित प्राचार्य नियुक्त हुए। 1991 में उनकी मृत्यु के बाद श्री एम0ए0एच0 खान ने प्राचार्य पद पर कार्यरत रहे। कालान्तर में डॉ0 जे0ए0 लारी डॉ0 एच0ए0 रिजवी व श्री एस0ए0 हसनाद प्राचार्य रहे। जुलाई 2000 से आज तक 2006 तक श्री एम0ए0एच0 खान प्राचार्य पद पर कार्यरत् हैं। वह कुशलता पूर्वक कार्यभार संभाल रहे हैं। महाविद्यालय को 1959 में आठ विषयों में आर्ट व कामर्स संकाय में आगरा विश्वविद्यालय से स्नातक स्तर पर सम्बद्धता प्राप्त हुई थी।

1971 में उर्दू, 1973 में समाजशास्त्र, 1995 में अर्थशास्त्र विषयों में स्नातकोत्तर स्तर पर सम्बद्धता प्राप्त हुई व 1973 में ही बी0एड0 विभाग की स्थापना हुई। वर्तमान में यहां विज्ञान संकाय भी कार्यरत है। वर्तमान में उपरोक्त शिक्षण संस्थाओं के अलावा हलीम मुस्लिम प्राइमरी स्कूल (हिन्दी मीडियम) व हलीम मुस्लिम इंग्लिश स्कूल, निसवां स्कूल जाजमऊ भी संचालित किए जा रहे हैं। वैसे तो हलीम मुस्लिम इण्टर व डिग्री कॉलेज में पढ़कर निकले सैकड़ों पूर्व छात्र विभिन्न क्षेत्रों में देश–विदेश में अपनी योग्यता का परचम लहरा रहे है। यहाँ पर कुछ पूर्व नामचीन छात्रों का ही विवरण दे पाना सम्भव है–

- ek0 vdje tgj& अमेरिका में प्रसिद्ध वैज्ञानिक के रूप में प्रतिष्ठित हैं।
- 'kE l vgen [kku& कुवैत में आयल कम्पनी के निदेशक पद पर कार्यरत हैं।
- 'kkfgn vkQrkc& पंजाब नेशनल बैंक के पूर्व निदेशक पद पर कार्यरत हैं।
- Mk0 egln jgekuh& नगर के प्रख्यात नेत्र रोग विशेषज्ञ हैं।
- Jh bj'kkn fetk& प्रख्यात उद्योग पति रहे हैं।
- vcy ojdkr uteh& बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के संयोजक व मुस्लिम मजलिश मुशाबिरात के सदस्य हैं।